२०२१-२२

शास्त्री परीक्षा

खण्ड - तृतीय, अधिसत्र – प्रथम

विषय - हिन्दी, पत्र - तृतीय

समयः ३½ घण्टे **सम्पूर्णाङ्क – ७०**

निर्देशः **एक पंक्ति में १० शब्द तथा एक पृष्ठ में कम से कम ८ पंक्तियों में उत्तर लिखना अपेक्षित है।**

खण्ड – अ

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए - **१५x१=१५**

क. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी के लेखक कौन हैं?

ख. संस्मरण से क्या समझते हैं?

ग. हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास कौन है?

घ. 'शिव-पार्वती' कहानी का मूलस्वर क्या है?

ङ. बुद्ध गुप्त का परिचय दीजिए।

च. जैनेन्द्र के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

छ. प्रमोद कौन है?

ज. अमेघ किस कहानी का पात्र है?

झ. रेखाचित्र किसे कहते हैं?

ञ. जाह्नवी किस प्रकार की कहानी है?

ट. हिन्दी का पहला नाटक किसे मानते है?

ठ. हिन्दी की किसी प्रसिद्ध आत्मकथा का नाम लिखिए।

ड. 'शत्रु' के लेखक कौन हैं?

ढ. 'वापसी' कहानी के प्रधान पात्र का नाम क्या है?

ण. हिन्दी के किसी आंचलिक उपन्यास का नाम लिखिए।

खण्ड- ब

२. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दीजिए - **५x३=१५**

क. आत्मकथा और जीवनी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

ख. हिन्दी रेखाचित्र के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

ग. 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

घ. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए।

ङ. 'शत्रु' कहानी की विशेषतओं पर प्रकाश डालिए।

च. मृणाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

छ. 'जाह्नवी' कहानी का सारांश लिखिए।

खण्ड – स

३. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर विस्तार से दीजिए-

५x६=३०

क. हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

ख. कहानी के तत्वों के आधार पर 'आकाशदीप' कहानी की समीक्षा कीजिए।

ग. 'वापसी' कहानी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

घ. हिन्दी कहानी के तत्वों पर प्रकाश डालिए।

ङ. 'त्यागपत्र' उपन्यास के कथानक को संक्षेप में लिखिए।

च. 'शिव-पार्वती' कहानी का सारांश लिखिए।

खण्ड – द

४. किन्हीं दो गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए - **२x५=१०**

क. नहीं भाई, पाप-पुण्य की समीक्षा मुझसे न होगी। जज हूँ, कानून की तराजू की मर्यादा जानता हूँ। पर उस तराजू की जरूरत को भी जानता हूँ। इसलिए कहता हूँ कि जिनके ऊपर राई-रत्ती नाप-जोखकर पापी को पापी कहकर व्यवस्था देने का

दायित्व है, वे अपनी जाने। मेरे वश का वह काम नहीं है। मेरी बुआ पापिष्ठा नहीं थीं, यह भी कहने वाला में कौन हूँ।

ख. चम्पा! मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मै उस लोक में विश्वास नहीं करता। पर मुझे अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर श्रद्धा हो चली है। तुम न जाने कैसे एक बहती हुई तारिका समान मेरे शून्य में उदित हो गई हो। आलोक की एक कोमल रेखा इस निविङ तम में मुसकराने लगी।

ग. ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा, संसार अंधकार में पड़ा है, और मानव जाति उस अंधकार में पड़ा है, और मानव जाति उस अंधकार में पथ-भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती चली जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसे मानव जाति को पथ पर लाना होगा, अन्धकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उनके शत्रु से युद्ध करना होगा।

****